"पौधशाला प्रबंधन" विषय पर शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

(दिनांक 8 व 9 दिसंबर, 2016)

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , जोधपुर में "पौधशाला प्रबंधन" विषय पर दिनांक 8 व 9 दिसंबर , 2016 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया , जिसमें मुख्य वन संरक्षक , जयपुर कार्यालय से संबंधित वन मण्डल अलवर, दौसा, जयपुर (उत्तर), सीकर तथा झुनझुनु वन मंडलों के क्षेत्रीय वन अधिकारी , वनपाल, वन रक्षक तथा कार्य प्रभारित कार्मिकों सहित कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में संस्थान के निदेशक श्री एन.के.वासु , भा.व.से. ने सभी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा की वैज्ञानिक दृष्टिकोण हर चीज़ में लाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि कई बार हम अपनी धारणाएं बना लेते है कि ऐसा होता है लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ऐसा नहीं होता है अतः हमें चीजों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझना चाहिए, जैसे किस तरह से पौधा पानी एवं पौषक तत्व लेता है। उन्होंने कहा की पौध तैयारी की शुरुआत बीज से होती है अतः हमें अच्छे बीज से पौधा तैयार करना चाहिए और पौधों की तैयारी पर पूरी तरह से नज़र रखनी चाहिए तथा अच्छी गुणवत्ता का पौधा तैयार करना चाहिए । उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से कहा की आप अपनी समस्याएँ वैज्ञानिकों को बतायें , जिन पर अनुसंधान की जरूरत है। श्री वासु ने कहा की वनीकरण खाली पेड़ लगाना ही नहीं होता , झाड़ियाँ, घास भी उसमें सम्मलित है , पारिस्थितिकी तंत्र में खाली जगह भी चाहिए , जीव- जन्तु परागण (Pollination) को आगे बढ़ाते है। अतः हमें पारिस्थितिकी तंत्र को समग्र रूप में देखना है। श्री वासु ने कहा की वन का मतलब केवल पेड़ों का समूह ही नहीं है , बल्कि सारी पारिस्थितिकीय (ecological) चीजों का पूरा समूह वन है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से कहा की प्रशिक्षण से जागृति पैदा होती है कि ऐसा भी होता है , आप यहाँ से नयी चीजों को लेकर जाओगे। उन्होंने कहा की हमें उत्पादकता एवं कुल जैवभार (Total Biomass) को बढ़ाना है।

इस अवसर पर संस्थान की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रंजना आर्या ने कहा की बिना आप लोगों की मदद से अनुसंधान आगे नहीं बढ़ सकता, अतः फील्ड में काम करने वाले तथा अनुसंधानकर्ताओं में आपसी विचार-विमर्श से समस्याओं पर अनुसंधान संभव होता है। वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री पी.एच.चव्हाण ने भी कहा की हम और आप दो पहलू है , उन्होंने खेजड़ी और पौधशाला का भी जिक्र किया।

इससे पूर्व कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय वस्तु की जानकारी देते हुए तीन दिवसीय गतिविधियों के बारे में बताया। उदघाटन सत्र के कार्यक्रम का संचालन कृषि-वानिकी एवं विस्तार प्रभाग की वैज्ञानिक "डी" श्रीमती भावना शर्मा ने किया।

तकनीकी सत्र के प्रारम्भ में डॉ. डी.के.मिश्रा ने "पौधशाला प्रबंधन-परिभाषा, स्थल चयन एवं स्थापना तथा पौधशाला प्रबंधन" विषय पर अपने संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण से पौधशाला प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी कराई। इसके बाद डॉ. संगीता सिंह ने "नर्सरी में जैविक खाद का उपयोग (Application of Biofertilizer in Forest Nursery), कंपोस्ट तैयार करना, खाद बनाना विषय पर अपने संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण में जानकारी दी। इसके बाद डॉ. यू.के.तोमर ने "वृक्ष सुधार कार्यक्रम " (Tree Improvement Programme) पर अपने संभाषण में वृक्ष सुधार कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी।

तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों को प्रयोगिक पौधशाला क्षेत्र का भ्रमण कराया गया जहां अनुसंधान सहायक द्वितीय श्री सादुलराम देवड़ा ने पौधशाला का संधारण , मिश्रण तैयार करना , थैलियों में भरना , मदरबेड , सिंचाई , निराई , शिफ्टिंग, ग्रेडिंग, वानस्पतिक संवर्धन, कटिंग, ग्राफ्टिंग, बडिंग, लेयरिंग इत्यादि की व्यावहारिक जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन डॉ. टी.एस.राठौड़ ने ,"बीजों का रखरखाव/ प्रबंधन एवं उच्च गुणवत्ता युक्त पौधों का उत्पादन (Seed Handling and Production of Quality Seedlings)" विषय पर अपने संभाषण में बीज फसल (Seed stand), बीज उत्पादन क्षेत्र (Seed Production Area) सहित उच्च गुणवत्ता युक्त पौध उत्पादन के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

इसके बाद "शुष्क क्षेत्रों में पौधारोपण एवं वनीकरण तकनीक (Afforestation & Plantation techniques in drylands)" विषय पर डॉ. जी. सिंह द्वारा संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण दिया गया। बाद में डॉ. रंजना आर्या द्वारा "औषधीय पादप एवं उनका संवर्धन (Medicinal Plants and their Propogation) पर संभाषण एवं प्रस्तुतीकरण के माध्यम से रुचि पूर्ण जानकारी दी गयी।

तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण किया जहां श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से. ने उन्हें वहाँ प्रदर्शित सूचनाओं की जानकारी कराई तथा वृक्षों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों की जानकारी दी। पोलिथीन के उपयोग के दुष्प्रभाव का जिक्र किया। तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर विभिन्न शोध गतिविधियों की जानकारी ली तथा वानिकी संवर्धन में नवीन अन्वेषण एवं तकनीक की जानकारी ली।

समापन सत्र में प्रशिक्षणार्थियों से प्रतिक्रियाएँ (feed back) जानी गयी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक श्री एन.के.वासु ने पौधशाला में कितना पानी चाहिए , पौधे को कितने पानी की जरूरत है , बीज एकत्रीकरण इत्यादि पहलुओं का जिक्र किया। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. गोविंद सागर भारद्वाज , भा.व.से. मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रशिक्षणार्थियों को संबोधोत करते हुए कहा कि पौध तैयार करना अहम भूमिका है, हमें नर्सरी पर ध्यान देकर अच्छे पौधे तैयार करना चाहिए , इसी से पौधारोपण की सफलता है। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से आहवान किया कि आपने जो भी ज्ञान यहाँ पर संग्रहित किया उसे अच्छी नर्सरी तैयार करने में काम में लेंवे। इस अवसर पर श्री. आर.के.सिंह , उप वन संरक्षक , जोधपुर ने कहा कि प्रशिक्षण से दक्षता (efficiency) बढ़ जाएगी। उन्होंने जल के समुचित उपयोग का भी जिक्र किया। इससे पूर्व कृषि वानिकी एवं विस्तार

प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से. ने दो दिवसीय कार्यक्रम की गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

प्रशिक्षण का आयोजन एवं व्यवस्था श्रीमती भावना शर्मा , वैज्ञानिक - डी, द्वारा की गयी। जिसमें रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक-प्रथम, श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक एवं श्री तेजाराम का विशेष सहयोग रहा।

"पौधशाला प्रबंधन" पर
दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला
दिनांक 8-9 दिसम्बर, 2016

AREA OF ARAVALI THROUGH SOIL AND WATER CONSERVATION
PREPARATION OF SITE

''पौधशाला प्रबन्धन'' पर
दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक 8-9 दिसम्बर, 2016

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
"पौधशाला प्रबन्धन" पर
दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक 8-9 दिसम्बर, 2016
सेमिनार हॉल,
शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान (आफरी)
पाली रोड, जोधपुर